

उद्योग प्रमुखता खंड II

भारतीय
ऑटो एवं ऑटो
कॉम्पोनेंट
उद्योग

विश्लेषणात्मक संपर्क



निकुंज भगत

वरिष्ठ वाइस प्रेसिडेंट, उत्पाद प्रमुख

nikunj.bhagat@crifhighmark.com

सुभांशु चट्टोपाध्याय

वरिष्ठ वाइस प्रेसिडेंट, राष्ट्रीय प्रमुख - बिक्री

subhrangshu.chattopadhyay@crifhighmark.com

राकेश रल्लापल्ली

वरिष्ठ प्रबंधक, अनुसंधान एवं अंतर्दृष्टि

rakesh.rallapalli@crifhighmark.com

सौम्य साह

विश्लेषक, अनुसंधान एवं अंतर्दृष्टि

saumya.sah@crifhighmark.com



कैलाश चंद्र भानू

मुख्य महाप्रबंधक,
आर्थिक अनुसंधान एवं डाटा विश्लेषण उद्भाग

bhanoo@sidbi.in

आर. प्रभावथी

उप महाप्रबंधक,
आर्थिक अनुसंधान एवं डाटा विश्लेषण उद्भाग

rprabha@sidbi.in

सोहम नाग

प्रबंधक, आर्थिक अनुसंधान एवं डाटा
विश्लेषण उद्भाग

sohamnag@sidbi.in

विषय-वस्तु की तालिका

01

भारतीय ऑटो एवं ऑटो कम्पोनेंट्स उद्योग कार्यपालक सार

03

परिचय एवं वर्तमान बाज़ार परिदृश्य

04

ऑटो एवं ऑटो कम्पोनेंट्स उद्योग में ऋण परिदृश्य

04

संविभाग और अनर्जक आस्ति प्रवृत्तियाँ

07

ऑटो एवं ऑटो कम्पोनेंट्स - उधारकर्ता परिदृश्य

08

एमएसएमई उधारकर्ता श्रेणी में उधारी और अनर्जक आस्ति प्रवृत्ति

11

भारत में स्थापित और उभरते ऑटो क्लस्टर

13

निर्यात ऋण परिदृश्य

15

औटोमोबाइल विनिर्माण और ऑटो कम्पोनेंट्स क्षेत्र के लिए ऋण का ब्रेकडाउन

17

ऑटो और ऑटो कम्पोनेंट्स उद्योग के लिए आगे का रास्ता

20

अस्वीकरण

20

सीआरआईएफ इण्डिया के बारे में

20

सिडबी के बारे में



प्रस्तावना



एमएसएमई क्षेत्र हमारे राष्ट्र की आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में, 6 करोड़ से अधिक एमएसएमई सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 30.3% का योगदान करते हैं और 11 करोड़ से अधिक व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करते हैं। वित्त वर्ष 2020 के दौरान कुल निर्यात में 49.8% की हिस्सेदारी के साथ यह क्षेत्र एक प्रमुख निर्यात योगदानकर्ता भी रहा है। हाल के वर्षों के दौरान, क्षेत्र में जीएसटी की शुरुआत के कारण कई संरचनात्मक परिवर्तन हुए हैं, जिसने इस क्षेत्र की मजबूती में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

एमएसएमई क्षेत्र एक जीवंत और गतिशील क्षेत्र है और राष्ट्र के जीडीपी विकास को अगले स्तर पर ले जाने का वादा करता है। हालांकि, वैश्विक व्यापार तनाव और बड़े कॉर्पोरेटों को प्रभावित करने वाली मांग में मंदी के कारण क्षेत्र भी बुरी तरह प्रभावित हुआ है। तदनुसार, नीति निर्माताओं के लिए आंकड़े की वास्तविक समय पर ट्रैकिंग के आधार पर नीतियों को तैयार करना महत्वपूर्ण हो जाता है। उद्योग क्षेत्रों के स्वास्थ्य और उनकी संभावनाओं का आकलन करने के लिए ऋण प्रवाह हमेशा एक अच्छा संकेतक रहा है।

उपरोक्त के मद्देनजर, सिडबी और सीआरआईएफ हाई मार्क ने "उद्योग स्पॉटलाइट" रिपोर्ट पेश करने के लिए सहयोग किया है, जो अपने प्रत्येक संस्करण में एक भावी निर्यातमुख उद्योग क्षेत्र का क्षेत्रवार गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। रिपोर्ट, क्षेत्र के ऋण परिदृश्य, प्रमुख उधारदाताओं, क्षेत्रीय संरचना, उधारकर्ता सेगमेंट के साथ-साथ इसके जोखिम विश्लेषण का विश्लेषण करती है। रिपोर्ट की अनूठी विशेषता क्लस्टर स्तर पर ऋण प्रवाह का विश्लेषण है जिसमें संबंधित उद्योग क्षेत्र में स्थापित बनाम उभरते समूहों के स्तर पर और अधिक बारीकी (स्लाइसिंग) के साथ संबंधित क्लस्टर में एमएसएमई की स्थिति की पुष्टि की गयी है।

क्लस्टर भारतीय विकास की कहानी का मुख्य आधार रहे हैं और इस रिपोर्ट के माध्यम से, सिडबी और सीआरआईएफ हाई मार्क का उद्देश्य नीति निर्माताओं को अधिक बारीकी से क्लस्टर स्तर पर डेटा प्रदान करना है, जिससे उन्हें उद्योग क्षेत्र में कठिनाई के क्षेत्रों की पहचान करने में सक्षम बनाया जा सके। त्रैमासिक रिपोर्ट में प्रत्येक संस्करण में एक उद्योग क्षेत्र को कवर किया जाएगा और पहले दौर में प्रमुख क्षेत्रों को कवर करने के बाद फिर उन क्षेत्रों पर फिर से विचार किया जाएगा।

रिपोर्ट में ऋण रूपरेखा ऑटो और ऑटो कम्पोनेंट्स के निर्माताओं दिए गए वित्तपोषण से संबंधित है। यह रिपोर्ट ऑटोमोबाइल (दोपहिया, यात्री वाहन, वाणिज्यिक वाहन) की खरीद के लिए दिए गए बैंक / गैर-बैंक वित्त को शामिल नहीं करती है। इस रिपोर्ट में प्रस्तुत ऋण विश्लेषण विशुद्ध रूप से निधि-आधारित सुविधाओं - यानी सावधि ऋण, कार्यशील पूंजी ऋण आदि पर विचार किया गया है और गैर-निधि आधारित सुविधाओं को इस विश्लेषण से बाहर रखा गया है।

उधारकर्ता सेगमेंट को उद्यमों के समय ऋण जोखिम, वित्तपोषित और गैर-वित्तपोषित जोखिम के समावेश के आधार पर अलग किया गया है यानी सूक्ष्म सेगमेंट <1 करोड़ एक्सपोजर, लघु 1 करोड़ से - 10 करोड़, मध्यम 10 करोड़ से - 50 करोड़, मिड कॉर्पोरेट्स 50 करोड़ से - 100 करोड़ और बड़े कॉर्पोरेट्स > 100 करोड़ का एक्सपोजर।

रिपोर्ट जून 2020 तक ब्यूरो को सूचित प्राथमिक आंकड़ों से जानकारी का एक समामेलन है और द्वितीयक आंकड़ा सार्वजनिक रूप से उपलब्ध डोमेन से लिया गया है।

भारतीय ऑटो और ऑटो कम्पोनेंट्स उद्योग

कार्यपालक सारांश

ऑटो और ऑटो कम्पोनेंट्स उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्रों में से एक है, जो देश में वृहद आर्थिक विकास और रोजगार चला रहा है। बड़े आकार के कॉरपोरेट्स से लेकर सूक्ष्म इकाई तक और देश भर में फैले समूहों में फैले सभी आकार के खिलाड़ियों द्वारा निर्मित, ऑटो और ऑटो कम्पोनेंट्स उद्योग भारत की जीडीपी में 7% का योगदान देता है, लगभग 50% जीडीपी का निर्माण करता है, और 3.7 करोड़ से अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करता है और निर्यात करने में अग्रणी है।

सेक्टर में हालिया मंदी और कोविड -19 महामारी का प्रभाव : जबकि उद्योग पिछले कई वर्षों से उत्पादन और कारोबार के मामले में विकास कर रहा है, घरेलू और वैश्विक ऑटो बाजारों में अभी मांग में कमी, ऋण के लिए कठिनाई, देश में नीति और बाजार के विकास के साथ युग्मित होने पर 2019 में ऑटो और ऑटो कम्पोनेंट्स क्षेत्र में गंभीर प्रभाव पड़ा है। हालांकि विशेषज्ञों का मानना था कि उद्योग वित्त वर्ष 2019-20 की अंतिम तिमाही के आसपास वापस उछाल देगा, लेकिन इसके उत्पादन और बिक्री में अभूतपूर्व गिरावट देखी गई क्योंकि मार्च 2020 में कोरोनावायरस रोग (कोविड-19) के प्रसार पर अंकुश लगाने के लिए सरकार द्वारा लगाए गए तालाबंदी के दौरान देश में एक ठहराव आया था।

वित्त वर्ष 2019-2020 में ऑटोमोबाइल उद्योग ने 26.36 मिलियन वाहनों का उत्पादन किया, पिछले वर्ष की तुलना में उत्पादन में 15% की गिरावट देखी गई, जिसमें बिक्री में 18% की कमी आई। ऑटो कंपोनेंट उद्योग का कुल कारोबार वित्त वर्ष 2019-20, में पिछले वर्ष की तुलना में 12% कम होकर 3.49 लाख करोड़ रुपये रहा।

ऋण में वृद्धि: जून 2020 तक क्षेत्र (ऋण मूल्य) द्वारा प्राप्त ऋण की कुल राशि रु.113 हजार करोड़ रही, जो बाजार में मौजूदा मांग में गिरावट के कारण तिमाही दर तिमाही 1% की मामूली वृद्धि का साक्षी रहा , मार्च 2020 में तालाबंदी के तत्काल बाद विनिर्माण गतिविधियों के निलंबन से यह गिरावट और तेज हो गई। पहले से ही मांग की मंदी के दौर में इस क्षेत्र के संकटों में वृद्धि हुई, जिसके कारण पिछले वर्ष की इसी तिमाही के दौरान ऋण मूल्य में वृद्धि भी 2.3% कम थी। मात्रा या सक्रिय ऋणों की संख्या जून 2020 तक सेक्टर 137.88 हजार रही।

संविभाग स्वास्थ्य: ऑटो और ऑटो कॉम्पोनेंट उद्योग ने पिछले 6 तिमाहियों में अनर्जक आस्ति (ऋण मूल्य में 90+ दिनों की कमी का अनुपात) में गिरावट देखी है, जो यथा जून 2020 तक 9.95% थी। एक वर्ष की अवधि में अनर्जक आस्ति में लगभग 3% की और पिछली तिमाही में 1.5% की गिरावट आई।

निर्यात ऋण वृद्धि: क्षेत्र के निर्यात ने भी उद्योग में मंदी का प्रभाव महसूस किया। निर्यात ऋण की कुल राशि (मूल्य) में दिसंबर 2018 से मार्च 2019 तक 35% की भारी गिरावट देखी गई। रिकवरी के कुछ संकेत प्रदर्शित करते हुए निर्यात ऋण सितंबर 2019 तक तिमाही दर तिमाही 5% की वृद्धि देखी, जो दिसंबर 2019 तक फिर से 5.1% घट गई। मार्च 2020 में कोविड-19 महामारी और राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन ने ऑटो और ऑटो कंपोनेंट्स उद्योग के निर्यात को बुरी तरह प्रभावित किया, साथ ही जून 2020 तक पिछली तिमाही में निर्यात ऋण में 20% की गिरावट और जून 2019 से 14% की गिरावट आई।

¹ उद्योग संगठन सोसाइटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैनुफैक्चरर्स (सियाम) से जीडीपी योगदान और रोजगार के आंकड़े

² उद्योग संगठन सोसाइटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैनुफैक्चरर्स

³ भारतीय उद्योग निकाय ऑटोमोटिव कॉम्पोनेंट निर्माता संघ

⁴ इस रिपोर्ट दिये गए 'के' में आंकड़े 'हज़ार' को संदर्भित करते हैं।

⁵ क्रेडिट के संदर्भ में, मात्रा, इस रिपोर्ट में सक्रिय / वितरित किए गए ऋणों की संख्या को संदर्भित करता है

इस क्षेत्र के ऋणों की कुल संख्या का 91% उधारकर्ता सूक्ष्म, लघु और मध्यम क्षेत्र में केंद्रित है: ऑटो और ऑटो कंपोनेंट्स इंडस्ट्री में जून 2020 तक करीब 1.29 लाख उधारकर्ताओं की मौजूदगी है। एमएसएमई उधारकर्ता खंड में जून 2020 तक क्षेत्र के लिए ऋण की कुल संख्या (ऋण की मात्रा) में 91% की हिस्सेदारी रखता है। उद्योग में सूक्ष्म उधारकर्ता खंड की ऋण में 58% की सबसे बड़ी हिस्सेदारी है, जो जून 2019 में 4% बढ़ी है, जबकि जून 2019 में लघु उधारकर्ता क्षेत्र में 1% की कमी आई है। मध्यम उधारकर्ता खंड में जून 2020 तक वर्ष दर वर्ष लगभग 2% की गिरावट देखी गई है।

इस क्षेत्र में कुल ऋण राशि का 80% शीर्ष ऑटो समूहों में केंद्रित है: शीर्ष 8 ऑटो क्लस्टर का जून 2020 तक ऑटो और ऑटो कंपोनेंट्स उद्योग द्वारा प्राप्त कुल ऋण (ऋण मूल्य) का 80% हिस्सा है। इन में से, स्थापित (कुल क्रेडिट > INR 5000 करोड़) अर्थात मुंबई - पुणे क्लस्टर, दिल्ली - गुडगांव - फरीदाबाद क्लस्टर, चेन्नई क्लस्टर का ऋण फोलियो में 93% का योगदान है। सानंद (अहमदाबाद) क्लस्टर और पीथमपुर क्लस्टर सरकार के मेक इन इंडिया 'कार्यक्रम के तहत चयनित उभरते क्लस्टरों में से हैं और जून 2020 तक अच्छी संविभाग वृद्धि और निष्पादन दर्शाया है। रु.15.31 हजार करोड़ ऋण एमएसएमई से संबन्धित है जो शीर्ष 8 ऑटो क्लस्टर में ऋण संविभाग का केवल 17% बनता है और इसमें जून 2020 तक 2.3% की वर्ष दर वर्ष वृद्धि देखी गई है।



परिचय एवं वर्तमान बाज़ार परिदृश्य

भारतीय ऑटो और ऑटो कम्पोनेंट्स उद्योग ने वैश्विक स्तर पर पिछले दो दशकों में काफी प्रगति की है, जिसने स्वयं को ट्रैक्टरों के सबसे बड़े बाजार के रूप में, दोपहिया वाहनों में दूसरा सबसे बड़ा, यात्री कारों में छठा सबसे बड़ा और व्यावसायिक वाहनों में आठवां सबसे बड़ा स्थान अर्जित किया है। यह देश में वृहद आर्थिक विकास और रोजगार देने वाले प्रमुख क्षेत्रों में से एक है, जिसने भारत की जीडीपी में 7% का योगदान दिया और 3.7 करोड़ से अधिक व्यक्तियों को रोजगार प्रदान किया है।⁶ ऑटो और ऑटो कम्पोनेंट्स सेक्टर भी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) के शीर्ष प्राप्तकर्ताओं में से एक है और अप्रैल 2000 और जून 2020 के बीच, इस क्षेत्र को 24.5 बिलियन अमरीकी डालर की विदेशी निवेश राशि प्राप्त हुई है।⁷

ऑटो और ऑटो कम्पोनेंट उद्योग का सकल कारोबार 2019-20 में लगभग 9.4 लाख करोड़ रुपये रहा। पिछले एक दशक में, भारत ने ऑटो और ऑटो कम्पोनेंट के निर्माण के लिए सबसे पसंदीदा स्थानों में से एक के रूप में अपने को स्थापित किया है और भारत के आर्थिक विकास में यह एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी है। मेक इन इंडिया 'और ऑटोमोटिव मिशन प्लान 2016-26' जैसी मजबूत पहलों के माध्यम से सरकार ने 2026 तक भारत में ऑटोमोबाइल क्षेत्र में 4 गुना वृद्धि और देश में 65 मिलियन नौकरियों का लक्ष्य रखा है।

हालांकि, वर्ष 2019 में ऑटो और ऑटो कम्पोनेंट के क्षेत्र में गिरावट देखी गई, जिसका कारोबार पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में वर्ष की पहली छमाही में 10% से अधिक घटा। ऑटोमोबाइल निर्माण भी, सभी श्रेणियों में वर्ष के दौरान, यात्री वाहनों के श्रेणियों सहित, दोपहिया और वाणिज्यिक वाहनों में, 2018 में 2.3 करोड़ इकाइयों के मुकाबले में 13.7% की गिरावट देखी गई। अर्थव्यवस्था में समग्र मंदी, तरलता की कमी, एनबीएफसी क्षेत्र में संकट, तीसरे पक्ष के बीमा और सड़क कर में वृद्धि के कारण वाहन की कीमतों में वृद्धि, बीएस VI उत्सर्जन मानकों के लिए अंतरण से पहले स्टॉक परिसमापन की अनिश्चितता और संभावित जीएसटी कटौती की उम्मीदों ने 2019 में ऑटो और ऑटो घटकों के क्षेत्र पर गंभीर प्रभाव डाला है।

इसके बाद वित्त वर्ष 2019-20 की अंतिम तिमाही में, कोविड-19 महामारी ने विश्व स्वास्थ्य पर प्रहार किया और अंततः अर्थव्यवस्थायें भी प्रभावित हुईं, लॉकडाउन, श्रम प्रवासन, विनिर्माण संयंत्रों के अस्थायी बंदी से शीर्ष विनिर्माण क्षेत्रों में से एक ऑटो और ऑटो घटकों के क्षेत्र भी प्रभावित हुए - यह क्षेत्र के लिए अभूतपूर्व था जिसने क्षमता का अनुपयोग, कम मांग और उत्पादन की उच्च लागत को अपने पीछे छोड़ दिया।

अप्रैल 2020 के महीने में ऐतिहासिक शून्य बिक्री और मई में परिचालन के केवल आंशिक रूप से फिर से शुरू होने के साथ, कोरोनावायरस महामारी ने उद्योग में पहले से ही 18 महीने की चल रही मंदी के साथ वित्तीय वर्ष 2020-21 की प्रथम तिमाही सबसे लंबे समय से बिक्री के लिए सबसे खराब तिमाही रही।

हालांकि, लॉकडाउन में क्रमिक ढील के साथ, जैसे-जैसे विनिर्माण खुलने लगा है, वाहन बिक्री में जुलाई 2020 से तेजी आने लगी और जून 2020 में वाहन पंजीकरण में सुधार देखा गया है। यह उद्योग मोटे तौर पर अपनी बीएस IV इन्वेंट्री को समाप्त करने में कामयाब रहा, सिवाय उन शहरों के डीलरों के जो कोविड-19 संरोधन क्षेत्रों में थे, जिनका कुछ स्टॉक रह गया।

विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले महीनों में इस क्षेत्र में निजी परिवहन द्वारा संचालित की मांग लगातार बनी रहेगी, जिससे उम्मीद है कि जारी महामारी में सार्वजनिक और परिवहन के अन्य साधनों से बचने के लिए ग्राहकों की भारी वृद्धि होगी।

⁶ भारतीय ऑटोमोबाइल निर्माण का इंडस्ट्री निकाय सोसाइटी

⁷ इन्वेस्ट इंडिया - राष्ट्रीय निवेश संवर्द्धन और सुविधा एजेंसी, उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्द्धन विभाग, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, उद्योग भवन, भारत सरकार

⁸ Turnover for automobile sector extrapolated to 2018-19 from SIAM data available till 2016-17. Turnover for auto components is sourced from ACMA

ऑटो और ऑटो कम्पोनेंट उद्योग में ऋण परिदृश्य

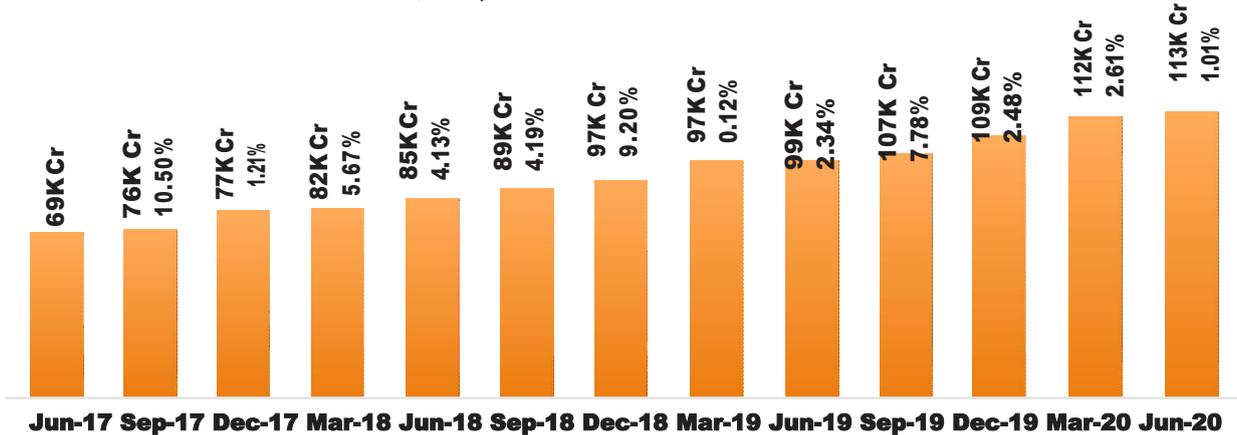
संविभाग और अनर्जक आस्ति प्रवृत्ति

ऑटो और ऑटो कम्पोनेंट्स सेक्टर ने पिछली कुछ तिमाहियों में ऋण मांग में हल्की वृद्धि देखी है, मार्च 2020 में लॉकडाउन की वजह से मांग में कमी आई और आपूर्ति पक्ष पर और दबाव बढ़ा। जून 2020 तक, सेक्टर⁹ द्वारा प्राप्त ऋण (ऋण मूल्य) की कुल राशि में त्रैमासिक वृद्धि मार्च 2020 (चार्ट 1 का संदर्भ लें) से 1% अधिक थी। जून 2020 तक सेक्टर द्वारा मूल्य¹⁰ में लिया गया कुल ऋण रु.113 हजार करोड़ था, और मात्रा में¹¹ या सक्रिय ऋणों की संख्या 137.88 हजार थी।

तिमाही दर तिमाही 1% की सुस्त वृद्धि के साथ मूल्य के हिसाब से ऋण संविभाग जून 2020 तक रु.113 हजार करोड़ है



चार्ट 1: ऑटो और ऑटो कम्पोनेंट - समग्र ऋण रुझान



Source: CRIF Bureau, India

2018 तक क्षेत्र के विकास के वर्षों के दौरान, अनर्जक आस्ति (90+ दिनों तक ऋण मूल्य के अनुपात में देरी, जिसे रिपोर्ट में 'अपचारिता' के रूप में भी जाना जाता है) ने भी ऊर्ध्व प्रवृत्ति देखा, जो दिसंबर 2018 में 16.79% के सभी समय के उच्च स्तर पर रहा। इसका मुख्य कारण ज्यादातर विदेशी बैंकों द्वारा मध्य और बड़े कॉरपोरेटों जो कि सार्वजनिक लिमिटेड निकाय हैं को दिए गए कार्यशील पूंजी ऋण हैं। इसके बाद, इस क्षेत्र के उधारकर्ताओं को ऋण देना जारी रखा गया और पाया गया कि संविभाग आकार में वृद्धि हुई है, जिसके परिणामस्वरूप अनर्जक आस्ति में गिरावट आई, जो मार्च 2019 में 12.93% तक पहुंच गया। मार्च 2020 तक अनर्जक आस्ति में 11% से अधिक की गिरावट के साथ रुझान जारी रहा है। मार्च 2020 में राष्ट्रव्यापी तालाबंदी और आरबीआई द्वारा घोषित की गई मोहलत, जिसके तहत ऐसे ऋण जिनके लिए अधिस्थगन अवधि के दौरान चुकौती नहीं किए गए थे, को अनर्जक आस्ति के रूप में वर्गीकृत नहीं किया गया था, इसने जून 2020 तक अभूतपूर्व रूप से क्षेत्र के लिए अनर्जक आस्ति को 10% अंक कम कर दिया (चार्ट 2 देखें)।

⁹ रिपोर्ट में क्रेडिट प्रोफाइल ऑटो और ऑटो घटकों के निर्माताओं के लिए वित्त से संबंधित है। यह रिपोर्ट ऑटोमोबाइल (दोपहिया, यात्री वाहन, वाणिज्यिक वाहन) की खरीद के लिए बैंक / गैर-बैंक वित्त को कवर नहीं करती है। इस रिपोर्ट में प्रस्तुत ऋण विश्लेषण गैर-निधिक ऋण सुविधाओं के लिए आंकड़ों को बाहर करता है जैसे कि ब्यूरो को दी गई बैंक गारंटी, साख पत्र, विदेशी मुद्रा आधारित ऋण सुविधाएं, सभी गैर-निधिक आधारित सुविधाओं का एकत्रीकरण, आदि।

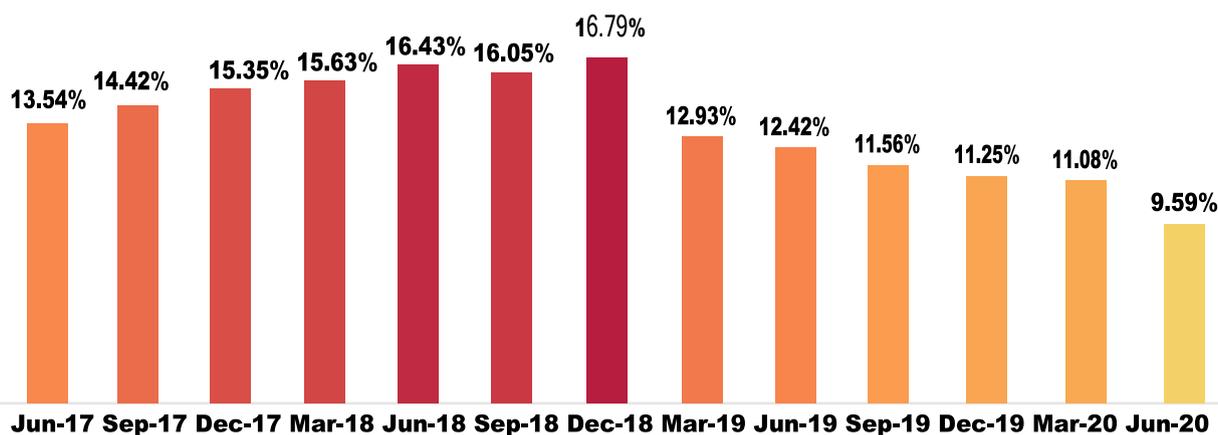
¹⁰ इस पूरी रिपोर्ट में मूल्य, ऋण के संदर्भ में, रुपये मूल्य या रुपये की राशि को संदर्भित करता है

¹¹ मात्रा, ऋण के संदर्भ में, इस रिपोर्ट में सक्रिय / वितरित किए गए ऋणों की संख्या को संदर्भित करता है

ऑटो और ऑटो कंपोनेंट सेक्टर के लिए अनर्जक आस्ति 9.59% है, जो पिछले 3 वर्षों में सबसे कम है



चार्ट 2: ऑटो और ऑटो कॉम्पोनेंट - अनर्जक आस्ति प्रवृत्तियाँ



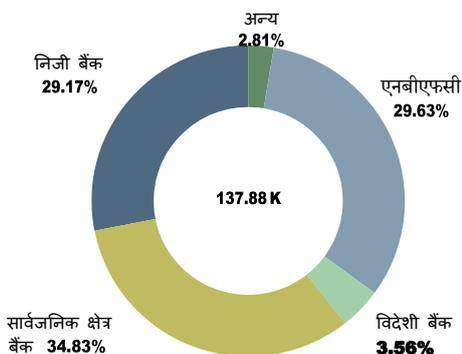
Source: CRIF Bureau, India

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक जून 2020 तक वॉल्यूम में 34.8% की हिस्सेदारी के साथ ऑटो और ऑटो घटक उद्योग को वित्त प्रदान करने में प्रमुख योगदानकर्ता हैं, इसके बाद एनबीएफसी 29.6%, निजी बैंक 29.1%, विदेशी बैंक 3.5% और अन्य 2.8% हैं (चार्ट 3ए का संदर्भ लें)। हालांकि, मूल्य के संदर्भ में, जून 2020 तक निजी बैंकों का 41.4% का सबसे बड़ा हिस्सा है, इसके बाद विदेशी बैंक 24.4%, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक 19.6%, एनबीएफसी 11% और अन्य 3.3% हैं। (चार्ट 3बी का संदर्भ लें)।

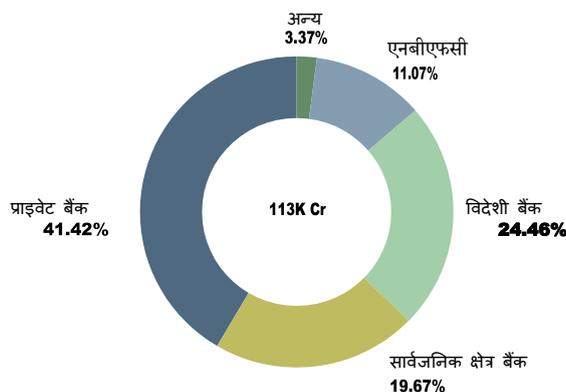
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में ऋण की मात्रा में सबसे बड़ा हिस्सा है, (34.8%), निजी बैंकों का मूल्य में सबसे बड़ा हिस्सा (41.4%)



चार्ट 3ए: ऑटो और ऑटो कम्पोनेंट्स - वित्तपोषण का स्वरूप (मात्रा द्वारा बाज़ार हिस्सा)



चार्ट 3बी: ऑटो और ऑटो कम्पोनेंट्स - वित्तपोषण का स्वरूप (मूल्य द्वारा बाज़ार हिस्सा)



Source: CRIF Bureau, India

¹² मात्रा से तात्पर्य ऑटो और ऑटो कंपोनेंट सेक्टर द्वारा लिए गए सक्रिय ऋणों की संख्या से है।

ऑटो और ऑटो कंपोनेंट्स सेक्टर द्वारा लिए गए कुल ऋण में से, सावधि ऋण 48%, इसके बाद कार्यशील पूंजी ऋण 33% और अन्य निधिक ऋण सुविधाएं¹³ 18% (तालिका 1ए देखें) हैं। जून 2020 तक सावधि ऋण का अनर्जक आस्ति 14.7% है, जिस में से कार्यशील पूंजी ऋण का 5.2% है (तालिका 1बी देखें)। जून 2020 तक प्राप्त कुल वित्त में से, निजी बैंकों द्वारा दिया गया सावधि ऋण 23.1% है। जून 2020 तक तदनु रूप अनर्जक आस्ति 1.45% है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा दिए गए सावधि ऋण जून 2020 तक समय संविभाग का 10.1% हिस्सा है, जबकि वित्तीय वर्ष 2016-17 से पहले के ऑटो और ऑटो कंपोनेंट्स को दिए गए ऋण के प्रदर्शन खराब हो कर 90 + दिनों के बाद भी अनर्जक आस्ति 57.5% के बराबर है, जो बड़े पैमाने पर मध्य और बड़े कॉर्पोरेट उधारकर्ताओं पर केंद्रित हैं, जो ज्यादातर निजी सीमित और साझेदारी-आधारित संस्थाएं हैं। कार्यशील पूंजी ऋण के लिए भी, निजी क्षेत्र के बैंकों के पास सबसे बड़ा हिस्सा है, जो कुल ऋण का 12.7% है, जून 2020 तक 1.8% की अपचारिता है। जून 2020 तक समय ऋण में से, विदेशी बैंकों द्वारा दिये गए कार्यशील पूंजी ऋण 10.4% और तदनु रिपी अपचारिता 3.5% है।

जून 2020 तक, सावधि ऋण कुल ऋण का 48%, कार्यशील पूंजी ऋण 33% है



तालिका 1ए: उत्पाद श्रेणियाँ और ऋणदाता मिश्रण					तालिका 1बी: उत्पाद श्रेणियाँ और ऋणदाता मिश्रण अपचारिता				
उधारदाता प्रकार	सावधि ऋण	कार्यशील पूंजी	अन्य	कुल योग	उधारदाता प्रकार	सावधि ऋण	कार्यशील पूंजी	अन्य	कुल योग
निजी बैंक	26K Cr 23.18%	14K Cr 12.74%	6K Cr 5.50%	47K Cr 41.42%	निजी बैंक	1.45%	1.81%	7.71%	2.39%
विदेशी बैंक	6K Cr 5.04%	12K Cr 10.42%	10K Cr 9.00%	28K Cr 24.46%	विदेशी बैंक	0.52%	3.55%	1.15%	2.04%
सार्वजनिक क्षेत्र बैंक	12K Cr 10.15%	8K Cr 7.17%	3K Cr 2.35%	22K Cr 19.67%	सार्वजनिक क्षेत्र बैंक	57.56%	10.65%	4.56%	34.12%
एनबीएफसी	8K Cr 7.31%	2K Cr 2.08%	2K Cr 1.68%	13K Cr 11.07%	एनबीएफसी	4.79%	6.65%	5.33%	5.22%
अन्य	2K Cr 2.11%	1K Cr 0.96%	0K Cr 0.30%	4K Cr 3.37%	अन्य	24.10%	26.65%	15.12%	24.02%
कुल योग	54K Cr 47.79%	38K Cr 33.36%	21K Cr 18.84%	113K Cr 100.00%	कुल योग	14.78%	5.27%	4.09%	9.59%

वित्त वर्ष 2016-17 से पहले (वित्त वर्ष 2015-16 तक) को दिए गए सावधि ऋण पर विंटेज विश्लेषण 90 से अधिक दिन के देय के खराब प्रदर्शन को दर्शाता है, जो सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए उच्च अपचारिता है।

इस विसंगति का श्रेय बहुत कम संख्या में अपचारी ऋणों (ऋणों की कुल संख्या का 0.08%) को दिया जाता है, जो कि वित्त वर्ष 2016-17 से पहले सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा मध्यम और बड़े कॉर्पोरेटों को दिए गए ऋण हैं, जो मुख्य रूप से दिल्ली में - गुड़गांव - फरीदाबाद क्लस्टर और मुंबई - पुणे क्लस्टर में हैं। ये अपचारी ऋण सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के 57.56% सावधि ऋण संविभाग में योगदान करते हैं।

वित्त वर्ष 2016-17 के बाद से मंजूर किए गए ऋणों के लिए, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में सावधि ऋण (टीएल) की अपचारिता 6.6% और समय बही अपचारिता 5.3% है। यह 3.6% के समय क्षेत्रवार अपचारिता और 2.5% के समय सावधि ऋण अपचारिता को भी दर्शाता है।

¹³ अन्य फंड आधारित ऋण सुविधाओं में ऋण आंकड़े शामिल होते हैं जो ऋण खाते के विरुद्ध पहचान की गई विशिष्ट ऋण सुविधा के बिना ब्यूरो को प्रस्तुत किया जाता है।

आटो एवं आटो घटक-उधारकर्ता परिदृश्य

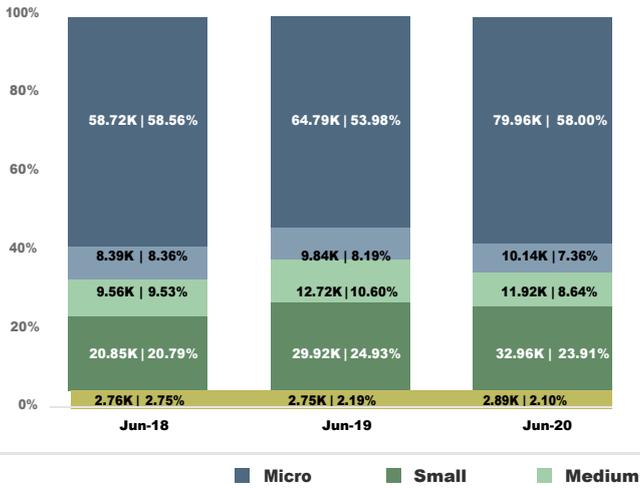
ऑटो और ऑटो घटक क्षेत्र में यथा जून, 2020 तक लगभग 1.29 लाख उधारकर्ता हैं जिसमें व्यावसायिक निकाय भी शामिल हैं। इनमें से, ऑटोमोबाइल विनिर्माण में मुख्य रूप से मध्य और बड़ी निगमित संस्थाएं शामिल हैं जबकि ऑटो घटक विनिर्माता मुख्य रूप से सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम उपक्रम हैं।

लिए गए ऋण (ऋण प्रमात्रा) की संख्या के दृष्टिगत, एमएसएमई उधारकर्ताओं का हिस्सा (चार्ट 4ए देखें) 91% है। उद्योग के सूक्ष्म उधारकर्ताओं में ऋण की हिस्सेदारी जून 2019 के 53.9% से बढ़कर जून 2020 तक 58% हो गई है, जबकि जून 2019 की अपेक्षा छोटे उधारकर्ता हिस्से में 1% की कमी आई है। मध्यम उधारकर्ता के हिस्से में जून 2020 तक लगभग 2% वर्ष दर वर्ष की हिस्सेदारी में गिरावट में देखी गई है

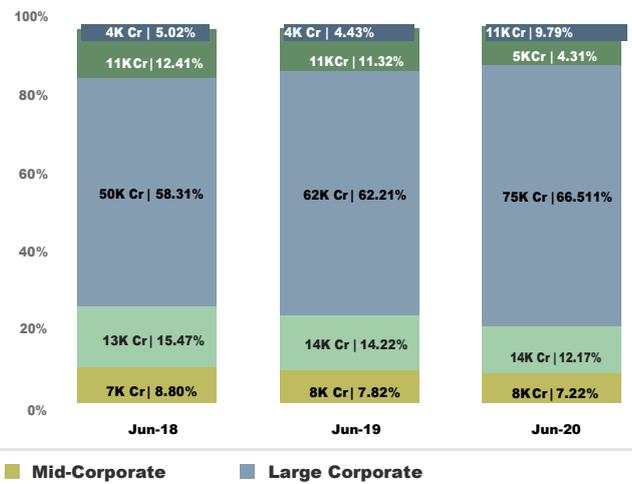
प्रमात्रा के आधार पर कुल ऋण का 91% एमएसएमई उधारकर्ता के हिस्से पर केंद्रित है। सूक्ष्म हिस्से के उधारकर्ताओं के पास 58% का सबसे बड़ा हिस्सा है।



चार्ट 4ए आटो एवं आटो घटक बाजार उधारकर्ता हिस्से के आधार पर हिसा (प्रमात्रा)



चार्ट 4बी आटो एवं आटो घटक बाजार उधारकर्ता हिस्से के आधार पर हिसा (मूल्य)



Source: CRIF Bureau, India

पिछले 3 वर्षों में मूल्य के आधार पर बड़े निगमों के पास ऑटो और ऑटो घटक क्षेत्र को प्रदत्त ऋण का सबसे बड़ा हिस्सा है, जो यथा जून 2020 (चार्ट 4 बी देखें) तक 66.5% है। यथा जून 2020 तक मूल्य के अनुसार एमएसएमई उधारकर्ता खंड को मिलाकर ऋण प्रदायगी 27% आता है।

भारत सरकार की 'मेक इन इंडिया' पहल ने भारत को वि-निर्माण इकाइयाँ स्थापित करने के एक गंतव्य के रूप में उत्कृष्टता प्राप्त करते हुए देखा है और विश्व बैंक के व्यवसाय करने में आसानी के वर्ष 2020 के श्रेणीनिर्धारण में भारत 14 देशों को पीछे छोड़कर 63 वें स्थान पर है। इन सक्षमकर्ताओं ने आटो घटक वि-निर्माणकर्ताओं को भारत में इकाइयाँ स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया है जिसका साक्ष्य भारत में वर्ष दर वर्ष एमसीए में नए पंजीकरणों की बढ़ती संख्या है और 2018 में इसकी वृद्धि 59% हुई है।

¹⁴ Of these borrowers, 62% are credit active as of June 2020

¹⁵ Borrower segments are classified on the basis of the total credit exposure of enterprises. Micro segment < 1 crore exposure, Small 1 crore -10 crore, Medium 10 crore -50 crore, Mid Corporates 50 crore – 100 crore and Large Corporates >100 crore exposure

उधारकर्ता के स्वरूप और व्यापार के प्रकार के एक प्रति विश्लेषण से पता चलता है कि प्रमात्रा के आधार पर 36.6% ऋण का लाभ उन सूक्ष्म उद्यमों द्वारा लिया जाता है जो स्वामित्व आधारित संस्थाएँ हैं, जबकि 11% का लाभ भागीदारी आधारित संस्थाओं द्वारा लिया गया है। प्रमात्रा के आधार पर 7.5% का अन्य ऋण स्वामित्व आधारित संस्थाओं के रूप में पंजीकृत छोटे उद्यमों को दिया जाता है, जबकि 9.3% साझेदारी आधारित संस्थाओं के रूप में पंजीकृत को दिया गया है (तालिका 2 देखें)।

इस क्षेत्र के लिए 37% ऋण स्वामित्व आधारित सूक्ष्म उधारकर्ताओं और 11% साझेदारी आधारित सूक्ष्म उधारकर्ताओं द्वारा लिया गया है।



तालिका 2: ऑटो और ऑटो घटक - उधारकर्ता परिदृश्य

उधारकर्ता समूह	स्वामित्व	भागीदारी	प्राइवेट लिमिटेड	सार्वजनिक लिमिटेड	अन्य	सकल योग
सूक्ष्म	36.67%	11.05%	3.65%	0.33%	6.29%	58.00% 23.91%
लघु	7.59%	9.39%	6.01%	0.42%	0.50%	
मध्यम	0.49%	2.24%	5.16%	0.64%	0.11%	8.64%
मध्य निगमित	0.02%	0.17%	1.50%	0.41%	0.00%	2.10%
वृहत निगमित	0.05%	0.04%	3.96%	3.25%	0.05%	7.36%
कुल योग	44.82%	22.89%	20.28%	5.05%	6.96%	100.0%

Source: CRIF Bureau, India

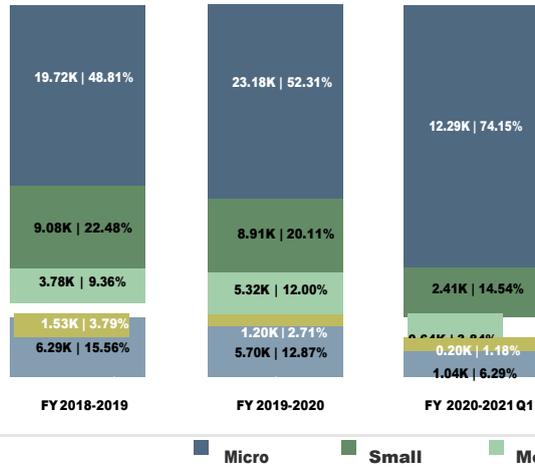
एमएसएमई उधारकर्ता खंड में उधार एवं अनर्जक प्रवृत्तियाँ

वित्त वर्ष 2019-20 में ऑटो और ऑटो कलपुर्ज क्षेत्र में संवितरित ऋणों की कुल संख्या 44.3 हजार थी। इन ऋणों का कुल ऋण मूल्य 1.01 लाख करोड़ रहा। वित्त वर्ष 2020-21 की पहली तिमाही में ऑटो और ऑटो घटक क्षेत्र (चार्ट 5 ए देखें) में कुल 16.58 हजार ऋणों का वितरण हुआ। वित्त वर्ष 2020-21 में (चार्ट 5 ए देखें) ऑटो और ऑटो घटक क्षेत्र में संवितरित ऋणों का कुल मूल्य 29 हजार करोड़ था।

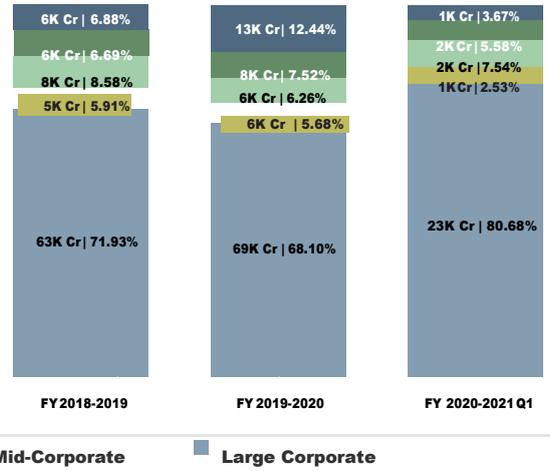
वित्त वर्ष **2020-21** की पहली तिमाही में एमएसएमई उधारकर्ता समूह को ऋण के वितरण की हिस्सेदारी पिछले वर्ष की समान तिमाही की तुलना में **24%** बढ़ी है



चार्ट 5 ए: ऑटो और ऑटो अनुबंधी - अधिग्रहण उधारकर्ता समूह की प्रवृत्ति (प्रमात्रा)



चार्ट 5 बी: ऑटो और ऑटो अनुबंधी - अधिग्रहण उधारकर्ता समूह की प्रवृत्ति (मूल्य)



वित्त वर्ष 2019-20 में ऑटो और ऑटो घटक क्षेत्र द्वारा लिए गए कुल ऋणों में से, 52.3% सूक्ष्म उधारकर्ता समूह के थे, जो 23.1 हजार ऋण हैं। वित्त वर्ष 2020-21 की पहली तिमाही में प्रमात्रा के आधार पर सूक्ष्म समूह द्वारा संवितरण में 74% की हिस्सेदारी थी, जबकि एमएसएमई समूह का कुल मिलाकर 92.5% (चार्ट 5 ए देखें) रहा। मूल्य के आधार पर, वित्त वर्ष 2020-21 की पहली तिमाही में वृहत्तर निगमों की संवितरण की हिस्सेदारी 80.6% थी, जबकि यथा जून 2020 (चार्ट 5 बी देखें) तक एमएसएमई उधारकर्ता समूह के लिए 17% थी।

मार्च 2020 में मध्य और बड़े निगमों को ऋण (प्रमात्रा) का संवितरण प्रत्यक्षतः लॉकडाउन की वजह से प्रभावित हुआ है, जिससे वित्त वर्ष 2019-20 की पहली तिमाही में 21% के हिस्से से वित्त वर्ष 2020-21 की पहली तिमाही में 7% तक की बड़ी गिरावट देखी गई है। एमएसएमई उधारकर्ता समूह को मई 2020 में आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंश के रूप में सरकार से गारंटी-समर्थित आपातकालीन क्रेडिट लाइन (ईसीएलजीएस) के रूप में वित्तीय राहत प्राप्त हुई है। वित्त वर्ष 2019-20 की पहली तिमाही की तुलना में वित्त वर्ष 2020-21 में सूक्ष्म उधारकर्ता समूह को ऋण (प्रमात्रा) का हिस्सा 50% से बढ़कर 74% (संदर्भ चार्ट 5 ए) हो गया है।

यथा जून 2020 तक, मध्य निगमित को छोड़कर, जहां गिरावट 1.5% देखी गई थी, पिछले साल की तुलना में सभी उधारकर्ता समूहों में अपचार कम हुआ है,



चार्ट 6: ऑटो और ऑटो घटक - उधारकर्ता समूह द्वारा अपचार की प्रवृत्तियाँ

उधारकर्ता समूह	जून 18	जून -19	जून -20
सूक्ष्म	4K Cr 6.06%	4K Cr 9.22%	5K Cr 7.35%
लघु	11K Cr 5.32%	11K Cr 8.89%	11K Cr 7.64%
मध्यम	13K Cr 5.65%	14K Cr 6.99%	14K Cr 6.71%
मध्य नैगम	7K Cr 9.99%	8K Cr 9.70%	8K Cr 11.27%
वृहत् नैगम	50K Cr 23.52%	62K Cr 14.87%	75K Cr 10.37%
कुल योग	85K Cr 16.43%	99K Cr 12.42%	113K Cr 9.59%

करोड़ में आंकड़े समूह के संविभाग की बकाया राशि का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रतिशत में आंकड़े यथा अवलोकन अवधि में समूह के अपचार को दर्शाते हैं।

यथा जून 2020 तक, मध्य नैगमों की अपचारिता 11.27% है, जो जून 2019 की अपेक्षा लगभग 2% बढ़ी है, यद्यपि पिछली 4 तिमाहियों में तिमाही प्रवृत्तियाँ 1 से कम या ज्यादा रही हैं। बड़े नैगमों के लिए, ऋण वसूली से अपचारिता जून 2019 में 14.8% से घटकर जून 2020 में 10.3% हो गयी है। एमएसएमई उधारकर्ता समूहों के लिए निरपेक्ष मूल्य के प्रति अपचारिता मोटे तौर पर स्थिर रही है। तथापि, जून 2019 (चार्ट 6 देखें) की तुलना में समग्र संविभाग के प्रतिशत के रूप में एमएसएमई अपचारिता में कमी आई है।

यथा जून 2020 तक स्वामित्व आधारित मध्य निगमों वाली संस्थाओं के लिए अनअर्जक आस्ति सबसे उच्चतर 40.4% स्तर पर रही



तालिका 3: ऑटो और ऑटो घटक - उधारकर्ता परिदृश्य

		Partnership	Private Limited	Public Limited	Grand Total
Micro	7.23%	5.94%	8.18%	26.59%	7.35%
Small	9.47%	5.36%	8.71%	6.43%	7.64%
Medium	11.60%	10.22%	6.72%	1.11%	6.71%
Mid-Corporate	40.40%	7.08%	12.87%	8.10%	11.27%
Large Corporate	0.00%	0.04%	14.25%	4.41%	10.37%
	9.27%	6.48%	12.62%	4.51%	9.59%

टिप्पणी : अन्य व्यवसाय स्वरूप श्रेणी वाले उधारकर्ता को, प्रमात्रा के आधार पर जिनका कुल ऋण 8% है, को इस विश्लेषण से बाहर रखा गया है। स्रोत: भारतीय सीआरआईएफ ब्यूरो

यथा जून 2020 तक, प्राइवेट लिमिटेड संस्थाओं ने अपने ऋण संविभाग के 12.6% तक ने अधिकतम चुकौती में दबाव को अनुभव किया है, तत्पश्चात 9.2% पर स्वामित्व वाली संस्थाएँ हैं। उधारकर्ता समूह और व्यवसाय स्वरूप के लिए अनअर्जक आस्ति के विश्लेषण से पता चलता है कि सबसे अधिक अपचारिता का सामना स्वामित्व आधारित मध्य नैगम संस्थाओं को करना पड़ा है जो 40.4% पर हैं, इसके बाद 26.5% पर सूक्ष्म उद्यम हैं, जो पब्लिक लिमिटेड निकाय है। वृहत नैगम संस्थाएं जो प्राइवेट लिमिटेड हैं उनकी अपचारिता 14.2% पर हैं, जबकि जून 2020 तक स्वामित्व आधारित इकाइयों व मध्यम और लघु उधारकर्ता समूह की इकाइयों की अपचारिता क्रमशः 11.6% और 9.4% रही(सन्दर्भ तालिका 3)।

वित्त वर्ष 2016-17 से पहले (वित्त वर्ष 2015-16 तक) दिए गए सावधि ऋण का पुराना विश्लेषण मुख्यतः स्वामित्व और प्राइवेट लिमिटेड संस्थाओं के लिए लगभग 50% की तर्ज पर 90+ दिनों में गिरावट दर्शाता है। मध्यम उधारकर्ता समूह को छोड़कर सभी उधारकर्ता समूहों में 40% तक उच्चतर अपचारिता के साथ दबावपूर्ण प्रोफाइल का संकेत देते हैं।

वित्त वर्ष 2016-17 के लिए मंजूर किए गए ऋणों के लिए यह पाया गया है कि उधारकर्ता समूह की सावधि ऋण अपचारिता बहुत कम है और समग्र बही अपचार, 9.59% के समग्र क्षेत्रगत अपचार में भी परिलक्षित होता है।

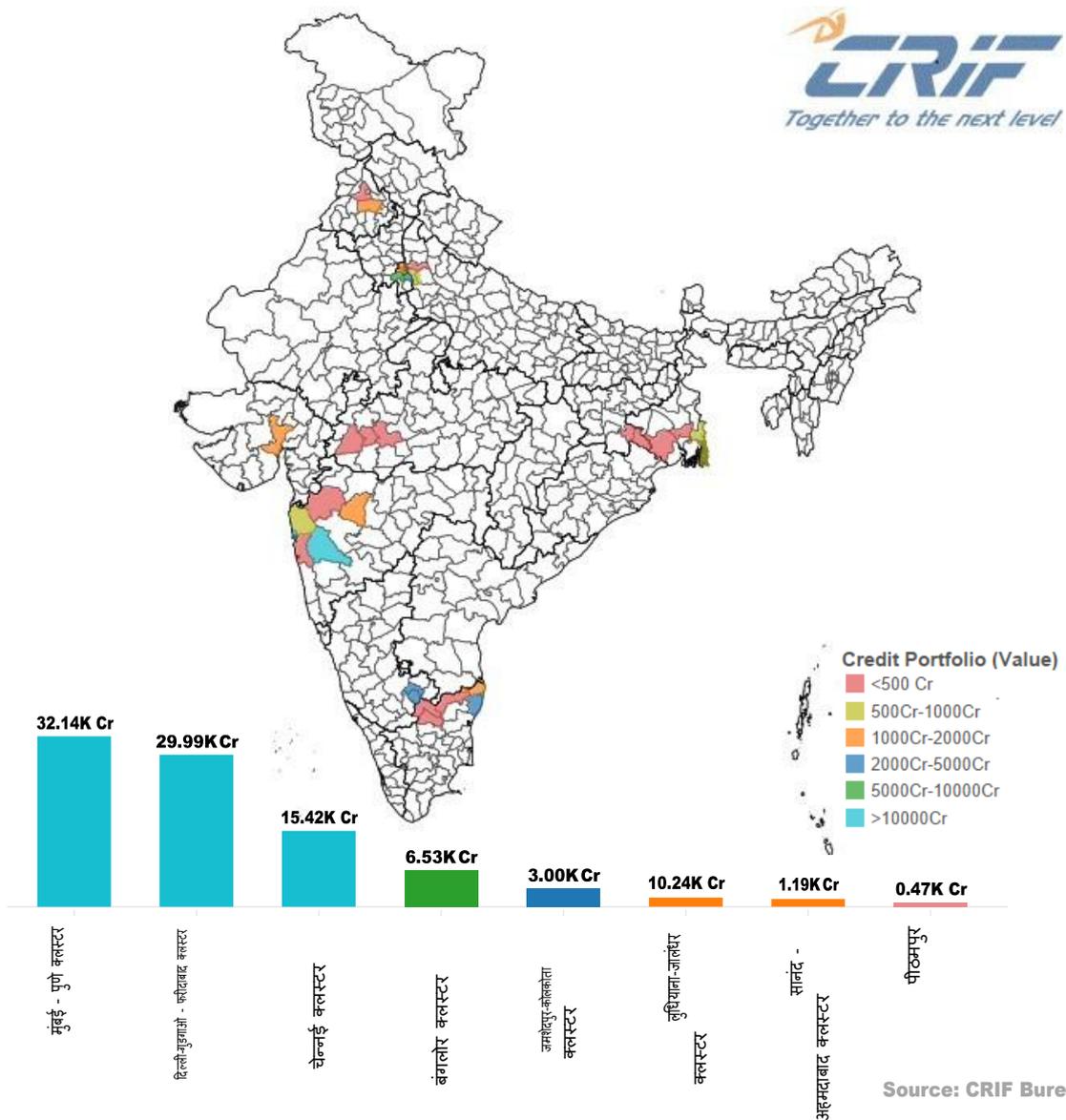
स्थापित और उभरते भारतीय ऑटो समूह

भारत में ऑटो और ऑटो घटक उद्योग बड़ी संख्या में समूहों में फैले हुए हैं। ये समूह कच्चे माल, कुशल श्रम और अन्य आधारभूत संरचना की उपलब्धता के आधार पर बनते हैं और ऑटो और ऑटो घटक क्षेत्र की वृद्धि की कहानी में प्रमुख घटक हैं। इन सभी समूहों में निर्माताओं, कलपुर्ज आपूर्तिकर्ताओं, संबंधित सेवाओं और समर्थन उद्योगों के बीच एक सहजीवी संबंध मौजूद है।

यथा जून 2020 तक शीर्ष 8 ऑटोमोबाइल समूह मिलकर ऋण संविभाग का 80% हिस्सा निर्मित करते हैं



चार्ट 7: ऑटो और ऑटो घटक - शीर्ष क्लस्टर



क्लस्टर	मुंबई पुणे क्लस्टर	दिल्ली-गुडगाँव-फरीदाबाद क्लस्टर	चेन्नई क्लस्टर	बंगलोर क्लस्टर	जमशेदपुर-कोलकाता क्लस्टर	लुधियाना-जालंधर क्लस्टर	सानंद (आहंदाबाद) क्लस्टर	पीठमपुर क्लस्टर
ऋण सक्रिय इकाइयों की संख्या	5000-7500	5000-7500	2500-5000	1500-2000	1500-2000	1500-2000	1000-1500	500-1000

मुंबई - पुणे क्लस्टर (औरंगाबाद और नाशिक) रु.32.14हज़ार करोड़ के बकाया संविभाग वाला सबसे बड़ा क्लस्टर है, और जून 2020 तक इसका कुल ऋण का 36% हिस्सा है (चार्ट 7 देखें)। मुंबई - पुणे क्लस्टर, दिल्ली - गुडगाँव - फरीदाबाद क्लस्टर, चेन्नई क्लस्टर और बेंगलोर क्लस्टर में स्थापित ऑटो क्लस्टर (कुल ऋण > रु.5000 करोड़) एक साथ शीर्ष क्लस्टर के लिए कुल क्षेत्रीय ऋण का 93% योगदान करते हैं।

शीर्ष क्लस्टर में, मुंबई - पुणे क्लस्टर में जून 2020 तक 37.8% की वर्ष दर वर्ष वृद्धि देखी गई, इसके बाद चेन्नई क्लस्टर 23% (तालिका 4 देखें)। मुंबई - पुणे क्लस्टर में विकास मुख्य रूप से औरंगाबाद और पुणे के कारण है, जो क्रमशः वर्ष दर वर्ष क्रमशः 158% और 42% वृद्धि हुई है, जो कि बड़े पैमाने पर मध्यम और बड़े कॉर्पोरेट सेगमेंट द्वारा संचालित हैं। चेन्नई और कांचीपुरम ने चेन्नई क्लस्टर के विकास में वर्ष दर वर्ष क्रमशः 50% और 11% की वृद्धि में योगदान दिया है। जबकि चेन्नई में मध्यम और बड़े कॉर्पोरेट्स का बड़ा खेल है, कांचीपुरम में विकास एमएसएमई उधारकर्ता सेगमेंट द्वारा संचालित है।

भारत सरकार ने अपने मेक इन इंडिया कार्यक्रम के तहत उभरते ऑटो क्लस्टर के रूप में उच्च क्षमता वाले कुछ ऑटो क्लस्टर की पहचान की है। इन समूहों के भीतर, ऋण अंतर्वेशन के संदर्भ में, ब्यूरो के आंकड़ों से पता चलता है कि सानंद (अहमदाबाद) क्लस्टर और पीठमपुर क्लस्टर ने बाजार की मंदी के बावजूद क्रमशः 2019 में 31% और 19% की प्रभावशाली वार्षिक वृद्धि देखी। हालाँकि, मार्च 2020 में घोषित लॉकडाउन से ये उभरते समूह जून 2020 तक क्रमशः 6% और 11% की तिमाही गिरावट के साथ प्रभावित हुए हैं।

इन शीर्ष क्लस्टरों में जून 2020 तक कुल मिलाकर अपचारिता 9.7% था। दिल्ली-गुडगाँव-फरीदाबाद क्लस्टर में सबसे अधिक 18.64% की अपचारिता देखी गई, इसके बाद मुंबई - पुणे क्लस्टर में 8.21% । चेन्नई क्लस्टर और बेंगलोर क्लस्टर में जून 2020 तक क्रमशः 1.15% और 1.52% की अपेक्षाकृत कम अपचारिता थी।

ऑटो और ऑटो कॉम्पोनेंट क्षेत्र रोजगार सृजन में योगदान के लिए जाना जाता है। सरकार के स्रोतों के अनुसार, ये शीर्ष 8 क्लस्टर अकेले ही क्षेत्र द्वारा जनरेट किया गए कुल रोजगार का लगभग 72% जनरेट करते हैं। इन क्लस्टरों में, चेन्नई क्लस्टर में 33%, इसके बाद दिल्ली - गुडगाँव - फरीदाबाद 22% और मुंबई-पुणे क्लस्टर 21% का रोजगार देते हैं।

उधारकर्ता खंड शीर्ष 10 क्लस्टरों में ऋण संविभाग का केवल 17% हिस्सा है



तालिका 4: ऑटो और ऑटो घटक - शीर्ष ऑटो समूहों की तुलना

		June 2020								
		मुंबई पुणे क्लस्टर	दिल्ली-गुडगाँव-फरीदाबाद क्लस्टर	चेन्नई क्लस्टर	बंगलोर क्लस्टर	जमशेदपुर-कोलकाता क्लस्टर	लुधियाना-जालंधर क्लस्टर	सानंद (आहंदाबाद) क्लस्टर	पीठमपुर क्लस्टर	योग
Overall	वेभाग बकाया(करोड़)	32.14K	29.99K	15.42K	6.53K	3.00K	1.24K	1.19K	0.47K	89.99K
	Y-o-Y Change	37.80%	3.11%	23.2%	1.58%	-18.76%	-34.72%	8.51%	-20.59%	14.40%
	Delinquency 90+ %	8.21%	18.64%	1.15%	1.52%	2.54%	43%	4.55%	5.33%	9.73%
	WC Utilization Ratio	43%	40%	36%	36%	44%	55%	24%	47%	40%
	TL Utilization Ratio	53%	64%	56%	55%	57%	53%	3%	36%	46%
MSME	Portfolio Outstanding (Cr)	4.17K	5.13K	2.79K	0.89K	0.83K	0.63K	0.52K	0.35K	15.31K
	Y-o-Y Change	6.58%	13.39%	-2.10%	-14.42%	-11.36%	-7.02%	-21.43%	1.64%	2.43%
	Delinquency 90+ %	11.76%	4.17%	4.55%	6.51%	3.51%	14.40%	10.46%	4.84%	7.06%
	WC Utilization Ratio	33%	45%	48%	26%	51%	57%	24%	57%	40%
	TL Utilization Ratio	47%	50%	38%	32%	25%	55%	52%	40%	43%

Source: CRIF Bureau, India

निधियों के उपयोग के संबंध में, कार्यशील पूंजी ऋण (डबल्यू सी) का समग्र उपयोग 40% और सावधि ऋण (टीएल) का 46% है। सावधि ऋण उपयोग से तात्पर्य कुल मंजूर ऋण राशि में से बकाया शेष का अनुपात है, जबकि कार्यशील पूंजी उपयोग से तात्पर्य उधारकर्ता की आहरण राशि से बकाया शेष का अनुपात है। अधिक सावधि ऋण उपयोग अनुपात क्षमता विस्तार की आवश्यकताओं के लिए ऋण राशि के उच्चतर विनियोजन को इंगित करता है, जबकि उच्च कार्यशील पूंजी उपयोग का अनुपात व्यवसाय की परिचालन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ऋण राशि के उच्चतर विनियोजन को इंगित करता है।

शीर्ष समूहों में, पीठमपुर में कार्यशील पूंजी का उच्चतम उपयोग 47% पर है, इसके बाद लुधियाना-जालंधर समूह का उपयोग 44% है। दिल्ली - गुडगाँव - फरीदाबाद में सावधि ऋण का अधिकतम उपयोग 64% पर है, इसके बाद लुधियाना-जालंधर समूह का उपयोग 57% है।

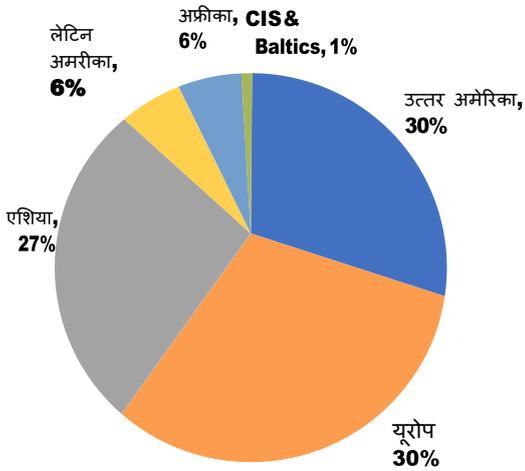
शीर्ष समूहों में, एमएसएमई उधारकर्ता खंडों द्वारा यथा जून 2020 तक लिए गए ऋणों में, कुल ऋण मूल्य का केवल 17% है, जो 15.31 करोड़ रुपए है। इस क्षेत्र में वर्ष दर वर्ष 2.4% की वृद्धि देखी गई, जो मुख्य रूप से दिल्ली - गुडगाँव --फरीदाबाद और मुंबई - पुणे समूह में क्रमशः 13.3% और 6.5% की वृद्धि देखी गई। यथा जून 2020 तक एमएसएमई उधारकर्ता खंड में अनर्जक आस्ति 7% रहा, जबकि कार्यशील पूंजी का समग्र उपयोग अनुपात 40% रहा और सावधि ऋण 43% पर था। एमएसएमई उधारकर्ता खंडों के तहत, लुधियाना-जालंधर समूह और पीठमपुर समूहों द्वारा 57% पर कार्यशील पूंजी का उच्चतम उपयोग देखा गया, जबकि यथा जून 2020 तक लुधियाना-जालंधर समूह ने भी 55% पर सावधि ऋण का उच्चतम उपयोग किया।

निर्यात के लिए ऋण परिदृश्य

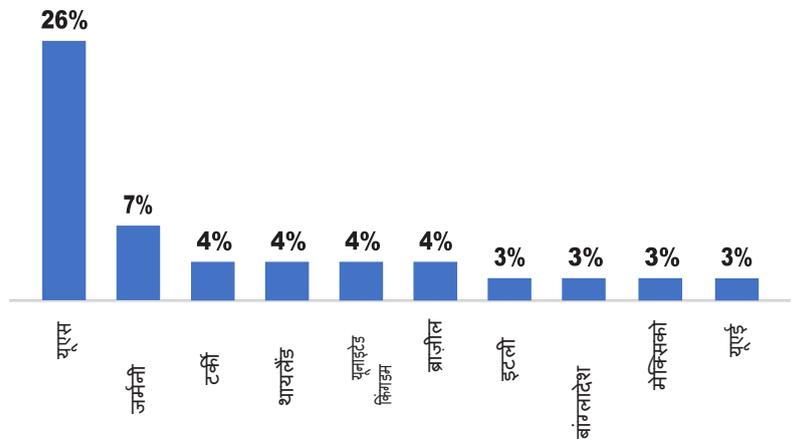
घरेलू स्तर पर ऑटो और ऑटो कलपुर्जा उद्योग न केवल वैश्विक महामारी प्रभाव से उबरने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, बल्कि इसके निर्यात, विशेष रूप से पड़ोसी देशों में, विदेशी मुद्रा चुनौतियों के कारण प्रभावित हो रहे हैं, नेपाल और बांग्लादेश की सीमा बंदी से निर्यात आदेश समाप्त हो रहे हैं।

क्षेत्र आधार पर 30% की हिस्सेदारी के साथ यूरोप और उत्तरी अमेरिका ऑटो घटकों के निर्यात के लिए सबसे बड़े बाजार बने हुए हैं। इसके बाद 27% पर एशिया है। 2019-20 में 26% (चार्ट 8 ए, बी देखें) की हिस्सेदारी के साथ यूएसए भारतीय ऑटो घटकों के निर्यात का सबसे बड़ा बाजार रहा।

चार्ट 8ए : आटो घटक - क्षेत्रवार निर्यात



चार्ट 8बी : आटो घटक -10 शीर्ष निर्यात स्थल



Source: Annual Report 2019-20, ACMA

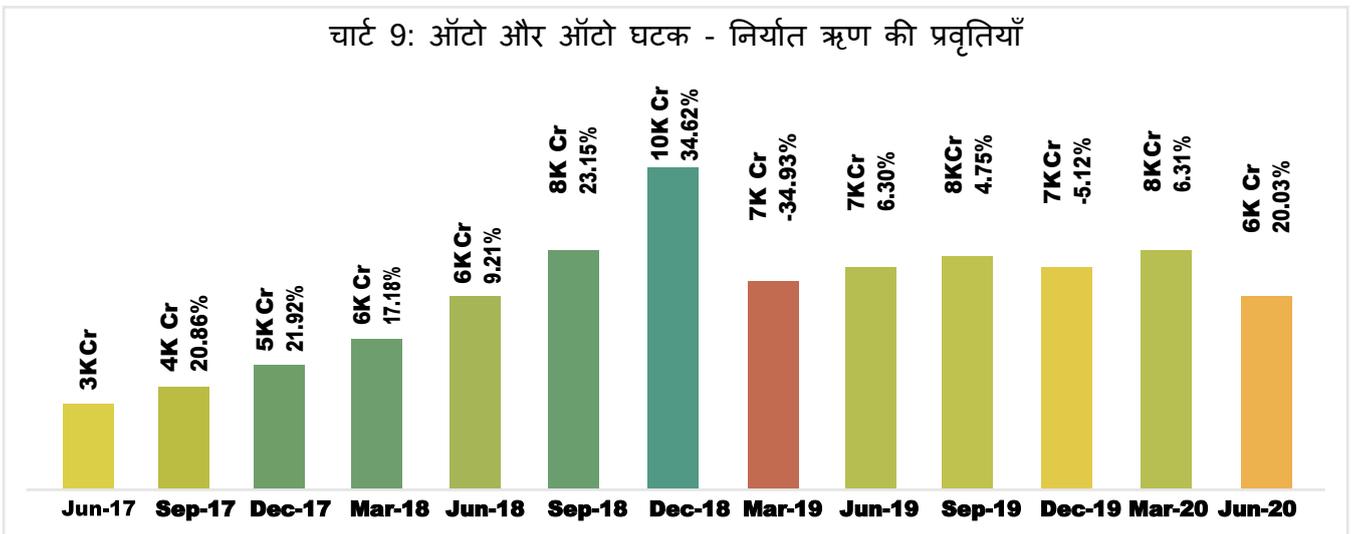
मार्च 2017 से क्षेत्र के निर्यात ऋण में निरंतर वृद्धि देखी गई है, मूल्य के आधार पर दिसंबर 2018 में 35% तिमाही दर तिमाही वृद्धि के साथ अधिकतम पर है। इसके बाद उद्योग मंदी का प्रभाव हुआ और मार्च 2019 में निर्यात ऋण में 35% की भारी गिरावट देखी गई। अगली दो तिमाहियों में निर्यात ऋण में क्रमशः 6.3% और 4.7% की वृद्धि देखी गई। वित्तवर्ष 2019-20 की तीसरी तिमाही में निर्यात ऋण में पुनः 5.1% की गिरावट देखी गई।

मार्च 2020 में कोविड-19 की वैश्विक महामारी और राष्ट्रव्यापी तालाबंदी से ऑटो और ऑटो घटक क्षेत्र के निर्यात पर भी गंभीर प्रभाव हुआ है, जिसमें यथा जून 2020 तक निर्यात में पिछली तिमाही की तुलना में 20% की गिरावट और जून 2019 (चार्ट 9 देखें)की में 14% की गिरावट हुई।

यथा जून 2020 तक क्षेत्र के निर्यात संबंधी ऋण में तिमाही 20% की गिरावट देखी गई



चार्ट 9: ऑटो और ऑटो घटक - निर्यात ऋण की प्रवृत्तियाँ



Source: CRIF Bureau, India

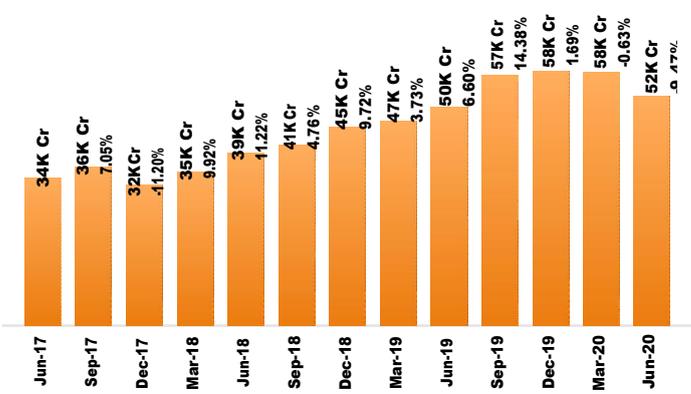
ऑटोमोबाइल विनिर्माण और ऑटो घटक क्षेत्र को ऋण उपलब्धता में व्यवधान

ऑटोमोबाइल विनिर्माण क्षेत्र में दोपहिया, तिपहिया, यात्री वाहन और वाणिज्यिक वाहन शामिल हैं। 2019-20 में बाजार में दोपहिया वाहनों की हिस्सेदारी 81% है, इसके बाद यात्री वाहन 13%, वाणिज्यिक वाहन 3% और तिपहिया वाहन 3% हैं। ऑटो घटकों के क्षेत्र में इंजन के घटक, ड्राइव ट्रांसमिशन और स्टीयरिंग घटक, बॉडी, चैसिस और, सस्पेंशन और ब्रेक लगाने वाले घटक, इलेक्ट्रॉनिक हिस्से आदि शामिल हैं।

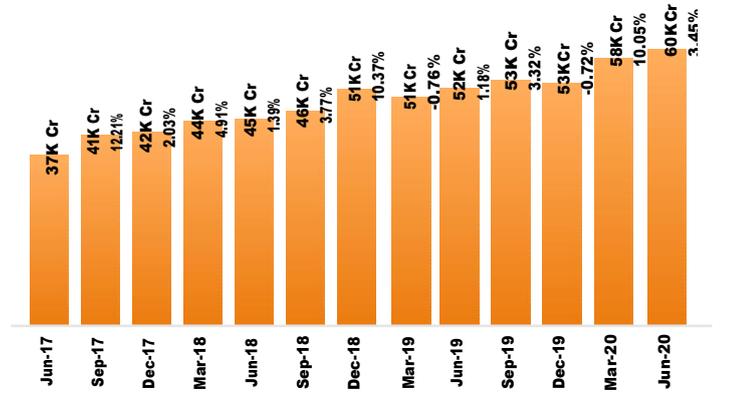
वित्त वर्ष 2019-20 में घरेलू बाजार में 26.36 मिलियन वाहन निर्मित किए गए थे, जो वित्त वर्ष 2015-16 से 4 वर्षों की अवधि में 2.3% की सीएजीआर से बढ़ रहा था। 2018 में भारत ऑटो बाजार में चौथे स्थान पर रहा। यद्यपि, 2019-20 में, उद्योग में पिछले वर्ष की तुलना में उत्पादन में 15% की गिरावट देखी गई और बिक्री में 18% की कमी आई।

भारत के सकल घरेलू उत्पाद में ऑटो घटक क्षेत्र का योगदान 2.3% है और भारत के निर्यात में इसकी हिस्सेदारी 4% है। यथा वित्तवर्ष 2019-20 तक, ऑटो घटकों के बाजार में ओईएम (मूल उपकरण निर्माता) द्वारा घरेलू बाजार में 51% की आपूर्ति और 28% का निर्यात और 20% के पश्च बाजार का हिस्सा है। वित्त वर्ष 2019-20 में 3.49 लाख करोड़ रु. का ऑटो घटक उद्योग रहा, जो पिछले वर्ष की तुलना में 12% कम है। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी, घरेलू बिक्री पिछले वर्ष की तुलना में 3% की वृद्धि दर्ज करते हुए 0.69 लाख करोड़ रु.पर स्थिर रही। वित्त वर्ष 2019-20 के दौरान निर्यात 1.02 लाख करोड़ रुपये रहा, जो वित्त वर्ष 2018-19.से 4% कम रहा।

चार्ट 10 ए: ऑटो विनिर्माण - ऋण में बढ़ोत्तरी



चार्ट 10 बी: ऑटो घटक - ऋण में बढ़ोत्तरी



यथा जून 2020 तक, ऑटोमोबाइल विनिर्माण क्षेत्र को मार्च 2020, (चार्ट 10a देखें) की अपेक्षा ऋण में लगभग 10% की तिमाही गिरावट देखी गई। क्षेत्र की मंदी के कारण उद्योग में ऋण की मांग में 1.6% की थोड़ी-थोड़ी वृद्धि देखी गई ,दिसंबर 2019 से मार्च 2020 में 1% कमी आई।

उद्योग में मंदी के कारण ऑटो घटक क्षेत्र को ऋण की उपलब्धता प्रभावित हुई है, जिससे दिसंबर 2019 में 0.8% की की तिमाही गिरावट देखी गई है। तथापि, उद्यम संवेदनाओं के दृष्टिगत मार्च 2020 में इस क्षेत्र में 10% की वृद्धि देखी गई, जबकि बंदी (चार्ट 10 बी देखें) के कारण जून 2020 में वृद्धि दर कम होकर 3.4% रहा गया ।

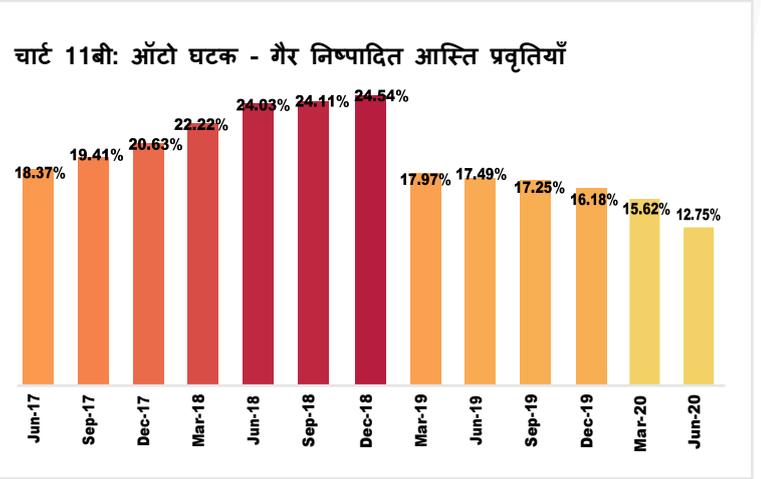
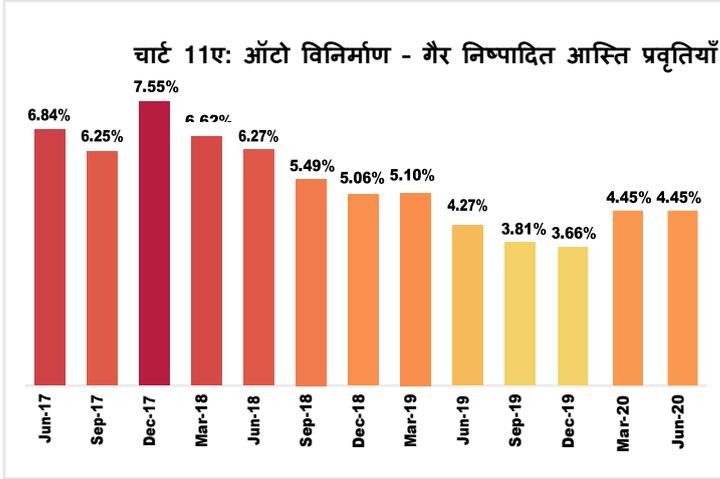
¹⁸ भारतीय ऑटोमोबाइल निर्माताओं की सोसायटी

¹⁹ भारतीय ऑटोमोटिव घटक विनिर्माण संघ का औद्योगिक निकाय

²⁰ भारतीय ऑटोमोबाइल निर्माताओं की सोसायटी (सियाम), 2019-20 के लिए घरेलू बाजार शेयर

²¹ पश्च बाजार ऑटो और ऑटो घटक उद्योग का सहायक बाजार है, जिसका संबंध विनिर्माण, सभी वाहनों के घटक, रसायन, उपकरण और अनुषंगी के पुनर्निर्माण से है, जो ओईएम द्वारा ग्राहक को ऑटोमोबाइल की बिक्री के बाद मिलता है।

²² भारतीय ऑटोमोटिव घटक विनिर्माण संघ (एसीएमए)



Source: CRIF Bureau, India

ऑटोमोबाइल विनिर्माण में अनर्जक आस्ति की प्रवृत्ति में पिछली 8 तिमाहियों में गिरावट दर्ज की गई है, जो दिसंबर 2017 में 7.55% से घटकर दिसंबर 2019 में 3.66% हो गई है, जिसमें मार्च 2019 में मामूली बढ़ोतरी हुई है। मार्च 2020 तक आते-आते सेक्टर की अनर्जक आस्ति बढ़कर 4.4% हो गयी और यथा जून 2020 तक इसमें स्थिरता बनी रही (चार्ट 11 ए देखें)।

दूसरी ओर, जून 2017 से ऑटो कंपोनेंट्स सेक्टर में अपचारिता बढ़ी है, जो दिसंबर 2018 में 25% के करीब पहुंच गई। मार्च 2019 में सेक्टर के अनर्जक आस्ति में 7% की गिरावट देखी गई, जो वित्त वर्ष 2016-17 से पहले वर्णित कार्यशील पूंजी ऋण के निपटान के कारण था, मुख्य रूप से मुंबई - पुणे क्लस्टर में, अनर्जक आस्ति में तेज सुधार हुआ। यथा दिसंबर 2019 तक, ऑटो घटक क्षेत्र में अनर्जक आस्ति 16.1% था, लेकिन इसमें 1.08% की तिमाही गिरावट देखी गई। इसके बाद यथा जून 2020 तक अनर्जक आस्ति घटकर 12.7% रह गया (चार्ट 11बी देखें)।

यथा जून 2020 तक निजी बैंक ऑटोमोबाइल निर्माताओं के लिए मूल्य और मात्रा दोनों में क्रमशः 34.9% और 49.3% की हिस्सेदारी के साथ ऋण प्रदान करने में अग्रणी रहे। मात्रा के संदर्भ में, विदेशी बैंकों की मात्रा में 30.6% और मूल्य में 28.6% की हिस्सेदारी है। गैर बैंकिंग वित्त कंपनियों में मात्रा के हिसाब से 19.2% का हिस्सा है जबकि ऑटो-मोबाइल निर्माताओं को दिए गए ऋण में उनका हिस्सा 2.8% है।

यथा जून 2020 तक ऑटो कंपोनेंट्स के लिए भी मात्रा और मूल्य में लिए गए ऋण के मामले में निजी बैंक हावी हैं। विदेशी बैंकों का मूल्य 16.3% की तुलना में 4.6% मात्रा की अपेक्षाकृत कम हिस्सेदारी है। दूसरी ओर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के पास यथा जून 2020 तक क्रमशः 19.7% मात्रा और 14.5% मूल्य की तुलना में 27.8% मात्रा और 23% मूल्य का बड़ा हिस्सा है।



ऑटो एवं ऑटो घटक उद्योग के लिए आगे का रास्ता

भारत में ऑटो और ऑटो घटक उद्योग भारत के विनिर्माण जीडीपी का लगभग 50% हिस्सा है। यह घरेलू बिक्री और निर्यात में योगदान करने की अपनी क्षमता के कारण सरकार के प्रमुख क्षेत्रों में से एक रहा है। ऑटोमोटिव मिशन योजना 2016 - 2026 के माध्यम से सरकार, भारत को 2026 तक ₹.18.89 लाख करोड़ के सकल राजस्व के साथ दुनिया में शीर्ष तीन ऑटोमोबाइल विनिर्माण हब के रूप स्थापित करना चाहती है।

- वित्त वर्ष 2013-14 और वित्त वर्ष 2017-18 के बीच इस क्षेत्र में निवेशित पूंजी 6.2% के सीएजीआर के साथ बढ़ी है।
- वित्त वर्ष 2013-14 और वित्त वर्ष 2017-18 के बीच 6.1% के सीएजीआर के साथ सेक्टर में रोजगार बढ़ा है।
- तमिलनाडु, महाराष्ट्र, हरियाणा, कर्नाटक और झारखंड - शीर्ष 5 राज्यों में 2018-19 में इस सेक्टर द्वारा जनित रोजगार का 78% हिस्सा है



वैश्विक रुझानों के अनुरूप, सरकार ने परिवर्तनकारी गतिशीलता और चरणबद्ध विनिर्माण कार्यक्रमों (पीएमपी) के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों, उनके घटकों और बैटरी को अंतिम रूप देने और कार्यान्वित करने के लिए परिवर्तनशील गतिशीलता और बैटरी भंडारण पर राष्ट्रीय मिशन का अनुमोदन किया है। भारत में वित्तपोषण उद्योग विनिर्माण के साथ-साथ उपभोग के लिए आसान और सस्ता पहुंच प्रदान करके मांग को बढ़ाने में भी अपनी भूमिका निभा रहा है।

हालांकि, देश के आर्थिक विकास में सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक होने के बावजूद, ऑटो और ऑटो कंपोनेंट क्षेत्र ने 2019 में अपने सबसे कठोरतम चरणों में से एक को देखा है, मांग में संकुचन के लगभग 18 महीने की अवधि देखी गई है, उद्योग के समस्त क्षेत्रों में दो दशक में बिक्री में सबसे अधिक गिरावट दर्ज की गई है।

कोविड-19 महामारी और मार्च 2020 में सरकार द्वारा घोषित राष्ट्रव्यापी तालाबंदी और अप्रैल 2020 में शून्य बिक्री तथा मई 2020 में लगभग 80% की गिरावट के कारण इस क्षेत्र के अधिकांश विनिर्माताओं की परेशानियां बढ़ी हैं। हालांकि, इस सेक्टर में सुधार की प्रक्रिया दिखने लगी है, और चालू वित्त वर्ष में बिक्री के मामले में अक्टूबर 2020 सबसे अच्छा महीना माना जाता है। उद्योग के विशेषज्ञ इसे कई कारकों जैसे ग्रामीण और अर्ध-शहरी बाजारों से मांग में वृद्धि, ऋण पर ब्याज दरों में कमी और त्योहारी सीज़न और वाहन निर्माताओं से आकर्षक प्रस्तावों को मानते हैं।

प्रमुख औद्योगिक समूहों में स्थित ऑटो और ऑटो कंपोनेंट इकाइयों के बीच सिडबी द्वारा संचालित एक लघु सर्वेक्षण आयोजित किया गया और इसमें संगठन, टर्नओवर, प्लांट और मशीनरी में निवेश, श्रमशक्ति और निर्माण गतिविधि की प्रकृति द्वारा संस्थाओं का एक स्वस्थ मिश्रण शामिल है, उक्त सर्वेक्षण से पता चला कि महामारी के दुष्प्रभाव से एमएसएमई इकाइयों द्वारा निम्नलिखित चुनौतियों का सामना किया जा रहा है

सर्वेक्षण संरचना

- अधिकांश छोटे उधारकर्ताओं और 50 से कम कर्मचारियों वाली विनिर्माण संस्थाएँ
- 47% प्राइवेट लिमिटेड कंपनियाँ, 33% एकल स्वामित्व वाली संस्थाएँ
- ₹. 5 करोड़ से कम कारोबार और संयंत्र और मशीनरी में >₹.1 करोड़ से ₹.10 करोड़ तक निवेश वाले 67% प्रत्यार्थियों



वित्त



- एमएसएमई को ऋण पर उच्च ब्याजदर
- एमएसएमई के लिए नकदी प्रवाह/तरलता की कमी कार्यशील पूंजी की आवश्यकताएं पूरी नहीं होती हैं

नीति एवं प्रक्रियाएँ



- तालाबंदी हटाने के बाद भी काम पर लौटने के लिए औद्योगिक श्रम के लिए प्रोत्साहन का अभाव
- ऑटो पार्ट्स पर 28% का उच्च जीएसटी दर, उधारण के लिए ट्रैक्टर और तिपहिया पार्ट्स
- विभिन्न राज्यों के लिए अलग औद्योगिक नीतियाँ
- बैंकों से ऋण लेने के लिए बहुत अधिक कागजी कार्य

बुनियादी ढांचा



- बिजली की विफलता, बिजली की विच्छिन्न आपूर्ति और एमएसएमई के लिए औद्योगिक क्षेत्रों में बिजली की उच्च दर
- औद्योगिक क्षेत्रों में एमएसएमई आरंभ करने और परिचालन के लिए उच्च किराया।
- मशीनरी ब्रेकडाउन

आपूर्ति चैन



- कच्चे माल की उच्च लागत/ एल्यूमिनियम लाभ के मार्जिन को कम करता है
- कोविड-19 संकट के दौरान अंतरराष्ट्रीय शिपिंग / परिवहन पर प्रतिबंध
- प्रवासी श्रम पर निर्भरता और तालाबंदी के पश्चात कुशल और अकुशल श्रमिकों की कमी

इसके अलावा, सरकार द्वारा एमएसएमई को मई 2020 में इमरजेंसी क्रेडिट लाइन गारंटी योजना के माध्यम से वित्तीय सहायता देने का प्रभाव देखा गया है, जो कि वित्त वर्ष 2020-21 के प्रथम तिमाही में 70% ताजा संवितरण (मात्रा) के साथ अकेले सूक्ष्म उधारकर्ता सेगमेंट में है। 01 जुलाई, 2020 तक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और निजी बैंकों ने मिलाकर एमएसएमई को आपातकालीन ऋण के रूप में ₹.52 हजार करोड़ का संवितरण किया था। भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा अन्य नीतिगत उपाय जैसे ऋणों का एक-बारगी पुनर्संरचना और मार्च से अगस्त 2020 तक के लिए 6 महीने की अधिस्थगन अवधि के लिए ₹.2 करोड़ तक के ऋणों के लिए प्रभारित चक्रवृद्धि ब्याज की छूट, जिसका उद्देश्य कोविड-19 महामारी से प्रेरित दबाव से अर्थव्यवस्था को उबरने में मदद करना है। निधि की लागत को कम करने, कुशल श्रम को बढ़ावा देने और बुनियादी ढाँचे संबंधी समस्याओं को हल करने, आदि उपायों से इस क्षेत्र की वृद्धि में मदद मिलेगी और इस तरह से इस क्षेत्र में ऋण की मांग में वृद्धि होगी।

- मार्च 2022 तक उद्योग के ऋण संविभाग में 26% अनुमानित वृद्धि
- जून 2020 को औद्योगिक अनार्जक आस्ति 9.5%
- मार्च 2022 तक एमएसएमई ऋण यथावत बना रहेगा।
- मार्च 2022 तक एमएसएमई उधारकर्ता सेगमेंट के लिए एनपीए में 1.2% की वृद्धि का अनुमान है
- मार्च 2022 तक मध्यम और बड़े कॉर्पोरेट्स को ऋण की अनुमानित वृद्धि 26% है
- मार्च 2022 तक मध्यम और बड़े कॉर्पोरेट्स की अनर्जक आस्ति में 1.3% की वृद्धि का अनुमान है



²³ एमएसएमई के लिए तरलता बैंक मंजूरीयों के रूप में ₹.1.10लाख करोड़ पार कर जाती है, आउटलुक इंडिया, 4 जुलाई, 2020



DRIVERS

- तीव्र अंगीकरण के दूसरे चरण का कार्यान्वयन और विनिर्माण (हाइब्रिड और) इलेक्ट्रिक वाहन (**FAME II**) और इलेक्ट्रिक वाहनों की खरीद पर कर प्रोत्साहन की शुरुआत
- ऑटो सेक्टर के लिए उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना का अनुमोदन और एमएसएमई को इमरजेंसी क्रेडिट लाइन गारंटी स्कीम के रूप में राजकोषीय प्रोत्साहन के रूप में अनुकूल सरकार की नीतियां - दोनों ही आत्म निर्भर भारत अभियान के हिस्से के रूप में हैं
- इस क्षेत्र द्वारा उच्च मूल्य का एफडीआई प्राप्त - अप्रैल 2000 और मार्च 2020 के बीच भारत में कुल एफडीआई प्रवाह का 5% ऑटो और ऑटो घटक क्षेत्र के लिए था।

- कोविड -19 महामारी और फलस्वरूप लॉकडाउन ने ऑटो खपत में वैश्विक मंदी के कारण उत्पादन और निर्यात को पटरी से उतार दिया है।
- लॉकडाउन के कारण श्रम के प्रवासन ने ऑटो उत्पादन को संकट में डाल दिया है, ओईएम और ऑटो पार्ट्स आपूर्तिकर्ता अभी तक पूर्ण उत्पादन क्षमता पर नहीं लौटे हैं।
- नई तकनीक में कठिन CO2 उत्सर्जन मानकों और उच्च निवेशों से क्षेत्र में आने वाली चुनौतियों का सामना करना पड़ता है



CHALLENGES



RESTRAINTS

ऑटो घटक में एमएसएमई इकाइयों के लिए तरलता की स्थिति और उधार की उच्च लागत घटक क्षेत्र की वृद्धि को प्रतिबंधित करता है एमएसएमई क्षेत्र के कुल ऋण का केवल 13% शीर्ष समूहों को जाता है

• भूमि की उपलब्धता और स्थापित ऑटो क्लस्टर में भूमि अधिग्रहण की उच्च लागत नई इकाइयों की स्थापना में एक बाधा है

चीन से कम गुणवत्ता के ऑटो पार्ट्स का आयात स्थानीय निर्माताओं के साथ निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा को बाधित करता है



• सरकार के 'मेक इन इंडिया' पहल और जीएसटी कार्यान्वयन में नए ऑटो क्लस्टर और एमएसएमई इकाइयों के नए पंजीकरण के उद्भव में सहायता मिली है, जो कि वित्त पोषण के औपचारिक चैनलों के लिए एक बड़े संभावित ग्राहक आधार में परिवर्तित हो रहे हैं।

• वाहन परिमार्जन नीति और बढ़ा हुआ मूल्यहास उपभोक्ताओं को शीघ्रता से वाहनों को बदलने के लिए प्रेरित कर सकता है, जिससे नए और उपयोग किए गए वाहनों की बिक्री बढ़ सकती है

कोविड-19 के फैलने पर अंकुश लगाने के लिए सामाजिक दूरी की प्रथाएं उपभोक्ताओं को, जो पहले सार्वजनिक परिवहन पर निर्भर थीं, अपने वाहन को खरीदने के लिए प्रेरित करेंगी



OPPORTUNITIES

जहां आने वाले महीनों में मांग में तेजी आने की उम्मीद है, वहीं आगे जाकर सेक्टर की रिकवरी भी कोविड-19 के प्रसार पर निर्भर करती है। अन्य देशों की तुलना में कोविड-19 के प्रसार को सफलतापूर्वक कम करने के बाद, भारत वर्तमान में संक्रमण की पहली लहर के अंतिम दौर पर है। इस नई व्यवस्था से मुकाबला करने के लिए, ऑटो और ऑटो घटक उद्योग द्वारा पुख्ता प्रयास की आवश्यकता है, जल्द से जल्द यथा संभव महामारी की पूर्व स्थिति को प्राप्त करने के लिए विकास और स्थायित्व दोनों को ध्यान में रखते हुए सरकार और नियामकों द्वारा नए और अधिक डिजिटली चालित तरीकों और व्यापार करने के साधनों को अपनाने के लिए ठोस प्रयासों की आवश्यकता है।

अस्वीकरण

इस रिपोर्ट में केवल समग्र स्तर की जानकारी है। इसमें कोई क्रेडिट जानकारी शामिल नहीं है और इसे क्रेडिट सूचना रिपोर्ट या उसके भाग के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। इस रिपोर्ट में विश्लेषण का आधार सीआरआईएफ हाई मार्क के डेटाबेस में क्रेडिट सूचना है। परिणामों को "कानूनी विवरण" के रूप में माना जा उपयोग नहीं किया जाए। सीआरआईएफ हाई मार्क अपने डेटा को सटीक और अद्यतित रखने का प्रयास करता है लेकिन इसकी सटीकता की गारंटी नहीं देता है। सीआरआईएफ हाई मार्क किसी भी त्रुटि, चूक, या डेटा में अशुद्धियों के लिए कोई दायित्व नहीं लेता है, भले ही किसी उपयोगकर्ता द्वारा इसमें दिए गए आंकड़ों के आधार पर किसी भी निर्णय के लिए कोई कार्रवाई की गई हो या कोई कार्रवाई नहीं की गई हो। सीआरआईएफ हाई मार्क क्रेडिट इंफॉर्मेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड से अनुमति के बिना रिपोर्ट की सामग्री को आंशिक या संपूर्ण में पुनः प्रस्तुत नहीं किया जाएगा। यहाँ व्यक्त किए गए विचार लेखक के हैं। इसलिए, इसकी सामग्री, सीआरआईएफ हाई मार्क और प्राप्तकर्ता के बीच किसी भी प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व नहीं करती है और उपरोक्त सामग्री के लिए सीआरआईएफ हाई मार्क द्वारा कोई दायित्व या जिम्मेदारी स्वीकार नहीं की जाती है।

सीआरआईएफ इंडिया के बारे में

सीआरआईएफ भारत में -आप के सभी ऋण से संबंधित अपेक्षाओं के लिए भागीदार।

भारत में सीआरआईएफ, ऋण सूचना, व्यवसाय सूचना, विश्लेषिकी, स्कोरिंग, ऋण प्रबंधन और निर्णय समाधान के लिए उत्पादों और सेवाओं की पेशकश करता है।

सीआरआईएफ, सीआरआईएफ हाई मार्क, भारत के अग्रणी क्रेडिट ब्यूरो का संचालन करता है, जिसके पास व्यक्तिगत रिकॉर्ड का सबसे बड़ा डेटाबेस है और हर महीने लाखों उधार निर्णयों को लेने में सहायता करता है। सीआरआईएफ हाई मार्क भारत का पहला पूर्ण-सेवा क्रेडिट ब्यूरो है जो सभी उधारकर्ता खंडों को कवर करता है - एमएसएमई / वाणिज्यिक, खुदरा और माइक्रोफाइनेंस। सीआरआईएफ हाई मार्क देश के सभी प्रमुख वित्तीय संस्थानों के साथ काम करता है, जिससे उन्हें कम कीमत वाले डेटा के साथ भी काम करने के लिए सिद्ध किया गया है, जो अपने प्रोप्राइटरी, भारत में निर्मित इंडिया सर्वे इंजन का उपयोग करते हैं।

हम अपनी वैश्विक विशेषज्ञता को पुणे में अपने उत्कृष्टता केंद्र के माध्यम से भारत में विश्लेषिकी, स्कोरिंग, क्रेडिट प्रबंधन और निर्णय समाधान के लिए लाते हैं। विशेषज्ञ डेटा वैज्ञानिक और सांख्यिकीविदों की हमारी टीम वित्तीय सेवाओं, बीमा या दूरसंचार क्षेत्रों के लिए उत्पत्ति, विपणन और संग्रह के लिए बीस्पोक स्कोरकार्ड विकसित करने में वर्षों के अनुभव का उपयोग करती है।

हम अपने ग्राहकों के लिए सबसे अधिक मूल्य जोड़ने के लिए वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं, स्कोरिंग में विशेषज्ञता और टॉप-रेटड क्रेडिट प्रबंधन सॉफ्टवेयर समाधानों के साथ-साथ भारत के लिए व्यापक डेटा और परिष्कृत डेटा तकनीक, दोनों को एक साथ लाते हैं।

प्रिज़मैटिक एक पंजीकृत और प्रोप्राइटरी सीआरआईएफ प्लेटफॉर्म है, जो दृष्टिगत रूप से समृद्ध, उपयोगकर्ता के अनुकूल और संवादात्मक तरीके से ब्यूरो से क्रेडिट डेटा पर उद्योग अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। यह प्लेटफॉर्म बाजार आकार और प्रतियोगिता, जोखिम परिदृश्य, सोर्सिंग ट्रेड के साथ-साथ क्रेडिट ब्यूरो मेंसे भौगोलिक डीप-डाइव जैसे मापदंडों पर डेटा को छिपाने में मदद करता है।

सिडबी के बारे में

संसद के एक अधिनियम के तहत 1990 में भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक की स्थापना की गई है। सिडबी को सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई सेक्टर) के संवर्द्धन, वित्तपोषण और विकास के तीहरे एजेंडे को क्रियान्वित करने और समान गतिविधियों में लगे विभिन्न संस्थानों के कार्यों के समन्वय के लिए प्रमुख वित्तीय संस्थान के रूप में काम कर रहा है। वर्षों से, अपने विभिन्न वित्तीय और विकासात्मक उपायों के माध्यम से, बैंक ने समाज के विभिन्न स्तरों पर लोगों के जीवन को स्पर्श किया है, पूरे एमएसएमई स्पेक्ट्रम पर उद्यमों को प्रभावित किया है और एमएसएमई पारितंत्र में कई विश्वसनीय संस्थानों के साथ काम किया है। विज़न 2.0 के तहत, सिडबी ने एमएसएमई क्षेत्र में सूचना विषमता को संबोधित करने के लिए विभिन्न पहल की है।